पाठ - 23

FTT2FV

सन्त गाडगे बाबा

‘‘यदि पैसे की तंगी है, घर में थाली नहीं है तो हाथ पर रख कर खाओ, पत्नी के लिए कम दाम की साड़ी, कपड़े खरीदो, टूटे फूटे मकान में रहो, रिश्तेदारों की खातिरदारी में कम खर्च करो, परन्तु बच्चों को बिना पढ़ाये न मानो’’

ये विचार थे, सन्त गाडगे जी के। सन्त गाडगे जी का जन्म महाराष्ट्र के अमरावती जिले के शेणगाँव में 23 फरवरी सन् 1876 में हुआ था। इनके पिता झिंगराजी जाणोरकर और माता सखूबाई थीं। इनका पूरा नाम देव ''डेबू'' जी झिंगरा जी जाणोरकर था। ये हमेशा मिट्टी का गडुआ या मटका रखे रहते थे, इसलिये उनको लोग गाडगे कहने लगे।

गाडगे जी के पिताजी खेती का काम करते थे। उनके पास छः-सात एकड़ भूमि खेती करने के लिये थी। पिता की शराब पीने की बुरी आदत होने के कारण सब कुछ समाप्त हो गया। धीरे-धीरे उनका स्वास्थ्य गिरता गया। अपनी मृत्यु से कुछ दिन पहले डेबूजी के पिताजी ने अपनी पत्नी से कहा कि डेबूजी का ध्यान रखना और उसे माँस-मदिरा से दूर रहने की सलाह देना।''

डेबूजी 8 वर्ष के थे, जब उनके पिता की मृत्यु हो गयी। माँ ने अपने पुत्र का पालन-पोषण गरीबी में किया। डेबूजी के नाना माँ-बेटे को अपने साथ अपने गाँव ले गये। माँ-बेटे मेहनत से काम करने लगे। डेबूजी पशु को चारा डालते और पशुओं को चराने ले जाते। कसरत करना और कुश्ती लड़ना उनका शौक था। डेबूजी की मामी कौतिकाबाई, तुकाराम, नामदेव आदि सन्तों के पदों को गातीं और वे उनका साथ देते। धीरे-धीरे वे पूरे गाँव में जाकर भजन गाने लगे। इस प्रकार डेबूजी गाँव की भजन मण्डली में भी सम्मिलित हो गये और लोग उनसे बहुत प्रभावित हुये।

सन् 1892 में डेबूजी का विवाह 16 वर्ष की आयु में कुन्ताबाई से हो गया। वे अपने मामा चन्द्रभान जी के साथ खेती में काम करने लगे। उनकी मेहनत, लगन और देखरेख के कारण खेती में अच्छा लाभ हुआ।

इसी समय गाँव के एक साहूकार ने अपनी ऊबड़-खाबड़ जमीन डेबूजी और उसके मामा को बेच दी। उस ऊसर भूमि पर दोनों ने कड़ी मेहनत करके उसे उपजाऊ बना लिया। साहूकार ने उस उपजाऊ जमीन को देखकर वापस लेने की बात सोची। डेबूजी और उनके मामा जी पढ़े लिखे नहीं थे, इसलिये उसने गलत कागजात में धोखे से उनके अँगूठे का निशान लगवाकर जमीन हड़प ली। इस धोखे को उनके मामा जी सहन नहीं कर सके और थोड़े दिन बाद ही उनका देहान्त हो गया। मामा की मृत्यु का डेबूजी पर गहरा असर हुआ। साहूकार ने गाँव के बहुत लोगों के साथ इस तरह की धोखाधड़ी की थी, इसलिये सन्त गाडगे बाबा ने संकल्प लिया कि गरीब लोगों की सहायता करेंगे और शिक्षित करेंगे ताकि किसी के धोखे के शिकार गाँव वाले न हो सकें। इसके लिये उन्होंने लोगों को संगठित किया

और समाज सेवा में लग गये। जहाँ भी गरीबों का शोषण होता, वे वहाँ पर संघर्ष करने के लिये तैयार रहते थे।

सन्त गाडगे जी ने अनुभव किया कि समाज में माँस-मदिरा का प्रचलन बहुत है। कहीं भी कोई भोज होता, उनमें माँस-मदिरा होना आवश्यक होता। डेबूजी देख चुके थे कि उनके पिता की मृत्यु का मुख्य कारण मदिरा थी, इसलिये उन्होंने इसको समाप्त करने का संकल्प अपने घर से ही लिया। उनकी पुत्री के नामकरण संस्कार के अवसर पर प्रीतिभोज देना तय हुआ। भोज में माँस-मदिरा रहित शुद्ध शाकाहारी भोजन परोसा गया जिससे पंच, मुखिया, माँस-मदिरा का सेवन करने वाले अन्धविश्वासी लोग भड़क उठे और कहा कि जब खिलाने को कुछ नहीं था तो बुलाया ही क्यों ? माँस-मदिरा खाना हमारी परम्परा है।

इस पर डेबूजी ने बहुत सहज भाव से समझाया और कहा कि मदिरा का सेवन करने वाले व्यक्ति को अच्छे बुरे का ज्ञान नहीं होता, वह उत्पात मचाता है, जिससे समारोह के शुभ कार्यों में बाधा उत्पन्न होती है।

इन सभी बातों का यह प्रभाव हुआ कि बन्धु बान्धव भोजन करके ही गए। इस सफलता से डेबूजी प्रसन्न तो हुये परन्तु इस प्रयास को और आगे बढ़ाने का संकल्प किया।

सन्त गाडगे बाबा समाज में फैली हुई बुराइयों को दूर करने के लिये निरन्तर चिन्तन करते रहते। अतः सामाजिक क्रान्ति के लिये उन्होंने साधु-संन्यासियों से सम्पर्क किया, उनके साथ भजन कीर्तन करते।

कबीर, तुकाराम, ज्ञानदेव, नामदेव, नानक, स्वामी विवेकानन्द जैसे सन्तों के उदाहरणों को देकर वे प्रवचन देते। बोल-चाल की भाषा में प्रवचन देने के कारण समाज के लोग उनसे बहुत प्रभावित हुये।

सन्त गाडगे बाबा मूर्ति पूजा का विरोध करते थे। वे कहते थे कि प्रभु का निवास प्रत्येक प्राणी और प्रत्येक स्थान पर है। अच्छे कार्य एवं दूसरों की मदद करके ईश्वर से मिला जा सकता है। वे मन्दिर बनवाने की अपेक्षा धर्मशाला बनवाने को अच्छा समझते थे क्योंकि धर्मशाला में लोग ठहरते थे और भोजन प्राप्त करते थे।

गाडगे जी ने अशिक्षा के कारण बहुत कष्ट सहन किये थे और समाज की दुर्दशा देखी थी, अतः गाडगे जी ने शिक्षा पर अधिक जोर दिया। इसके लिए उन्होंने सैकड़ों स्कूल बनवाये। वे कहते थे कि असली पूजा तो शिक्षा मन्दिर है जहाँ वास्तव में विद्यार्थी ही प्रभु की मूर्तियाँ हैं। गाडगे जी समाज की कुव्यवस्था और कुरीतियों से बहुत दुःखी थे, मानव सेवा करना सबसे पहला काम मानते थे। दहेज प्रथा, बाल विवाह, छुआ-छूत जैसी बुराइयों को दूर करने के लिए उन्होंने बहुत संघर्ष किया और सफल हुये। गो-रक्षा हेतु उन्होंने एक अभियान चलाया।

''सच्चा ईश्वर दरिद्र नारायण के रूप में तुम्हारे सामने खड़ा है, उसकी सेवा करो।''

सन्त गाडगे बाबा

सन्त गाडगे बाबा से डॉ0 भीमराव अम्बेडकर और गाँधी जी की मुलाकात हुयी। गाँधी जी गाडगे जी के विचारों और आदर्शों से बहुत प्रभावित हुये। गाँधीजी ने गाडगे जी को गरीबों का सेवक माना।

सन्त गाडगे बाबा मधुमेह की बीमारी से पीड़ित थे। 1954 से उनका स्वास्थ्य धीरे-धीरे गिरने लगा। 1955 में बाबा को अस्पताल में भर्ती किया गया। अनेक बड़े-बड़े लोग उनको देखने आए। बाबा सोचने लगे कि अस्पताल का इतना खर्च उठाना मुश्किल है अतः बिना बताये ही रात को अस्पताल से निकल गए। इधर-उधर घूमकर प्रवचन देते। समय बीतने लगा, 6 दिसम्बर, 1956 को डॉ0 भीमराव अम्बेडकर की मृत्यु का समाचार पाकर वे रो पड़े और कहा कि मेरा सेनापति चला गया। बाबा चिन्तित हुये, खाना पीना सब छोड़ दिया। 20 दिसम्बर, 1956 को सन्त गाडगे बाबा का स्वर्गवास हो गया।

अभ्यास

1. निम्न प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

(क) सन्त गाडगे जी का नाम क्या था ?

(ख) डेबूजी के पिता ने अन्तिम समय में डेबूजी की माँ से क्या कहा ?

(ग) मामा की मृत्यु के बाद डेबूजी ने क्या संकल्प किया ?

(घ) सन्त गाडगे बाबा ने क्या-क्या कार्य किए ?

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(क) डेबूजी के पिता ..... और माता ..... थीं।

(ख) इनका विवाह ..... की आयु में ..... से हो गया।

(ग) उनके पिता की मृत्यु का मुख्य कारण ..... थी।

(घ) भोजन में ..... भोजन परोसा गया।

(ड.) वे मन्दिर बनवाने की अपेक्षा ..... बनवाना अच्छा समझते थे।

3. सही वाक्य के सामने सही (√) तथा गलत वाक्य के सामने गलत (ग्) का निशान लगाइए:-

(क) सन्त गाडगे जी के पिता का नाम झिंगराजी जाणोरकर और माता सखूबाई थी।

(ख) 20 दिसम्बर, 1956 को सन्त गाडगे बाबा की मृत्यु हो गई।

(ग) डेबू जी आँत की बीमारी से पीड़ित थे।

(घ) सन्त गाडगे बाबा मूर्ति पूजा के विरोधी थे।